AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

ISO 9001:2008
ISBN / ISSN

ISSN - 2277 - 5730
Volume - IX, Issue - I, JANUARY - MARCH - 2020
Impact Factor - 6.399 (www.sjifactor.com)

Is Hereby Awarding This Certificate To

डॉ. एस. सी. अंगडि

In Recognition of the Publication of the Paper Entitled

प्रयोजनमूलक हिंदी की विशेषता और स्वरूप

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Editor : Vinay S. Hatole

M.G.V.C. Arts, Commerce & Science College
MUDDEBIHAL
-586212
Dt: Vijayapur.

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX Issue - I January - March - 2020

HINDI PART - I

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖
Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

PRINCIPAL,
M. G. V. C. Arts, Com. & Science College
MUDDEBIHAL - 586212.

Co-ordinator,
Internal Quality Assurance Cell
M.G.V.C. Arts, Commerce & Science College
MUDDEBIHAL-586212. Dist: Vijayapur.

M.G.V.C. Arts, Commerce & Science College
MUDDEBIHAL
-586212
Dt: Vijayapur.

VOLUME - IX, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF HINDI PART - I

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	प्रयोजनमूलक हिंदी और अनुवाद क्षेत्र **डॉ. गायत्री मिश्रा**	१-८
२	रोजगारोन्मुख हिंदी (विशेष संदर्भ - अनुवाद का क्षेत्र) **डॉ. सतीश यादव**	९-१३
३	प्रयोजनमूलक हिंदी की विशेषता और स्वरूप **डॉ. एस. सी. अंगडि**	१४-१७
४	अनुवाद क्षेत्र **डॉ. अफशाँ बेगम अहमदअली, देशमुख**	१८-२५
५	रोजगारोन्मुख हिंदी **डॉ. ललिता राठोड**	२६-३०
६	विज्ञापन क्षेत्र **कुशलदास साहू** **डॉ. चन्द्रकुमार जैन**	३१-३४
७	एक आश्वस्थ सफलता: विज्ञापन **डॉ. नानासाहेब श. गायकवाड**	३५-३८
८	दूरदर्शन के क्षेत्र में हिन्दी **डॉ. बायजा कोटुळे**	३९-४१
९	रोजगार की सभावनाएँ **डॉ. मंत्री आर. आडे**	४२-४९
१०	संगणक और हिन्दी **माहेश्वरी** **डॉ. चन्द्रकुमार जैन**	५०-५४
११	अनुवाद क्षेत्र और हिंदी **प्रा. प्रमोद किशनराव घन**	५५-५६
१२	रोजगारोन्मुख हिन्दी	५७-६०

Co-ordinator,
Internal Quality Assurance Cell
M.G.V.C. Arts, Commerce & Science College
MUDDEBIHAL-586212. Dist: Vijayapur.

PRINCIPAL
M. G. V. C. Arts, Com. & Science College
MUDDEBIHAL - 586212.

M.G.V.C. Arts, Commerce & Science College MUDDEBIHAL -586212 Dt. Vijayapur

VOLUME - IX, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

३. प्रयोजनमूलक हिंदी की विशेषता और स्वरूप

डॉ. एस. सी. अंगडि
एम. जी. वी. सी. कॉलेज, मुद्धेबिहाल, विजयपूर, कर्नाटक ।

प्रयोजनमूलक भाषा से अभिप्राय 'प्रयोजन' या निष्प्रयोजन के विपरीतार्थ में नहीं वरन् वह भाषा के व्यावहारिक पक्ष को उजागर करने केलिए प्रयुक्त भाषायी रूप है । प्रयोजनमूलक हिंदी के संदर्भ में प्रयोजन विशेषज्ञ में 'मूलक' उपसर्ग लगने से 'प्रयोजनमूलक' शब्द बना है । प्रयोजन से तात्पर्य उद्देश्य अथवा प्रयुक्त तथा 'मूलक' उपसर्ग से तात्पर्य आधारित अतः प्रयोजनमूलक भाषा से तात्पर्य हुआ किसी विशिष्ठ उद्देश्य के अनुसार प्रयुक्त भाषा। यह भाषायी रूप सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विशेष रूप से प्रयुक्त होता है और इसका प्रयोजनमूलक विशेषण इसके व्यावहारिक और कामकाजी पक्ष को अधिक स्पष्ट करता है। भाषा के प्रयोजनमूलक रूप को अंग्रेज़ी में 'फंक्शनल लेंग्वेज' या 'लेंग्वेज फार स्पेसिफिक पर्पज' कहते है।

प्रयोजनमूलक हिंदी का अर्थ-ऐसी विशिष्ट हिंदी जिसका प्रयोग किसी विशिष्ट प्रयोजन के लिए किया जाता है । मुख्यतः हिंदी भाषा पर विचार करने पर हिंदी के मुख्यतः तीन रूप सामने आते हैं - (1) बोलचाल की हिंदी (2) साहित्यिक हिंदी (3) प्रयोगिक हिंदी । प्रयोजनमूलक हिंदी को व्यावहारिक, कामकाजी संज्ञाएँ भी दी जाती रही है, इन क्षेत्रों में सामान्यतः आपसी बातचीत, दैनदिन, व्यवहार, सब्जी-मण्डी, पर्यटन आदि ।

इसके विपरीत प्रयोजनमूलक हिंदी का प्रयुक्ति क्षेत्र प्रशासन परिचालन, प्रौद्योगिकी, ज्ञान-विज्ञान आदि । प्रयोजनमूलक व्यावहारिक या सामान्य शब्द नहीं, किन्तु एक पारिभाषिक शब्द है। जिसका स्पष्ट और परिभाषित अर्थ एक ऐसी विशिष्ट विशेष प्रयोजन के लिए ही किया गया है ।

प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूपों का आधार उनका प्रयोग क्षेत्र है । राजभाषा के पद पर आसीन होने से पूर्त हिंदी सरकारी कामकाज तथा प्रशासन की भाषा नहीं थी । मुसलमान शासकों के समय उर्दू या अरबी और अंग्रेज़ों के समय अंग्रेजी थे । स्वतंत्रता के बाद भारत के राजभाषा हिंदी बनी जिसके फलस्वरूप साहित्य लेखन ही नहीं बल्कि भारत में आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और टेक्नोलाजी के प्रस्पुटन और फैलाव के कारण विभिन्न क्षेत्रों के साथ सरकारी कामकाज तथा प्रशासन के नये अनछुए क्षेत्र से गुजरना पडा जिसको देखते हुए प्रशासन, विधि, दूरसंचार, व्यवसाय, वाणिज्य, खेलकूद, पत्रकारिता आदि से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली गठन की ओर संतोषप्रद विकास एवं विस्तार किया गया । अतः प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रमुख प्रयुक्तियाँ देखा जा सकता है -

साहित्यिक प्रयुक्ति

इसका प्रयोग करता, नाटचशास्त्र, साहित्यशास्त्र आदि की भाषा के रूप में होता है । साहित्य किसी भी भाषा की अनिवार्य आवश्यकता है । साहित्यिक भाषा में जनसामान्य के जीवन के साथ दर्शन, राजनीति, समाजशास्त्र तथा संस्कृति का आलेख पाया जाता है । हिंदी भाषा की साहित्यिक प्रयुक्ति की परंपरा बहुत पुरानी है । हिंदी साहित्य में अनेक विधाओं तथा उसके विशेषताओं को समेटने की क्षमता है । यह हिंदी भाषा की साहित्य अत्यधिक सजग और सर्वसमावेशी है ।

कार्यालयी प्रयुक्ति

यह सरकारी कामकाज और प्रशासन में प्रयुक्त होने वाला भाषा रूप है । हिंदी भाषा की अत्यंत आधुनिक एवं सर्वोपयोगी प्रयुक्ति में कार्यालयी प्रयुक्ति आता है । प्रशासनिक भाषा और बोलचाल की भाषा में पर्याप्त अंतर होता है । कार्यालयी भाषा की अपनी विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली, पद रचना तथा आदि होते हैं । कार्यालयीन हिंदी में काम-काज के रूप में मसौदा लेखन, टिप्पणी लेखन, पत्राचार, संक्षेपण, प्रतिवेतन, अनुवाद आदि में प्रयुक्त होता है ।

वाणिज्य प्रयुक्ति

यह वाणिज्य, बैंक या मंडियों की भाषा रूप है । इन क्षेत्रों में प्रयुक्त भाषा साहित्यिक वाक्य रचना से वाणी मिला होता है जैसे-सोने में उछाल, चाँदी मंदा तेल की धार ऊँची आदि । अतः हिंदी भाषा की वाणिज्य प्रयुक्ति का क्षेत्र काफी विस्तृत और सारा ही लोकप्रिय है।

तकनीकी भाषा प्रयुक्ति

यह इंजीनियर, विज्ञान, शास्त्र या चिकित्सा आदि भाषा रूप है । राजभाषा प्रयोग संबंधी राष्ट्रपति ने 27 अप्रैल 1960 के आदेशानुसार भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन वैज्ञानिक शब्दावली आयोग की स्थापना 1961 में की गई । विज्ञान एवं टेक्नोलजी की भाषा सामान्य व्यवहार की भाषा से सर्वधा भिन्न होती है, अतः वैज्ञानिक एवं तकनीकि विशिष्टता में ढालने के लिए हिंदी, संस्कृत के साथ अंतराष्ट्रीय शब्दावली का प्रयोग किया गया । आज विज्ञान और टेक्नोलॉजी के क्षेत्रों में अनुप्रयुक्त हो रहा है, विज्ञान, गणित, विधि, अंतरिक्ष, दूरसंचार आदि ।

कानूनी भाषा प्रयुक्ति

कानूनी भाषा का प्रयुक्ति का सीधा संबंध राज-भाषा, अनुवाद-प्रक्रिया तथा तकनीकी शब्दावली से माना जाता है । कानूनी प्रक्रिया एवं अदालतों में तकनीकी शब्दावली होने के कारण जनसामान्य के लिए जटिल, नीरस तथा उबारु प्रतित होता था इसी को देखते हुए विधि एवं कानून की क्षेत्र में हिंदी, अन्य भारतीय भाषाओं के साथ अंग्रेज़ी के प्रचलित शब्दों को ग्रहण किया है और

इस प्रकार कानून एवं विधि की भाषा में प्रयोग होनेवाले तकनीकी शब्दावली, विशिष्ट पद विन्यास, लम्बे संयुक्त वाक्य रचना को सुचारु रूप से चलाने प्रतिष्ठित हुआ ।

जनसंचारी भाषा प्रुक्ति

यह पत्रकारिता, आकाशवाणी, दूरदर्शन और विज्ञापन में प्रयुक्त होनेवाली भाषा रूप है । हिंदी के प्रयोजनमूलक रूप में विज्ञापन और जन संचार की भाषा तेजी से उभरकर सामने आयी है। आकर्षक वाक्य-विन्यास, शब्दों का उचित चयन तथा वैशिष्ट्यपूर्ण प्रवाहमय भाषिक संरचना विज्ञापन भाषा प्रयुक्ति के मुख्य तत्व आते हैं । विज्ञापन की भाषा व्यापार, व्यवसाय तथा वाणिज्य से संबंध रखती है : अतः उसमें आकर्षण, मोहक, भाषा शैली, श्रव्यता, संक्षिप्तता आदि गुणों का होना भी आवश्यक है । वर्तमान युग में हिंदी के विज्ञापन भाषा का रूप जन संचार के माध्यम आदि आते हैं । अतः किसी भी देश की जन-संचार उस देश की सशक्त प्रगतिशीलता को दर्शाता है ।

प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रणेता मोटूरि सत्यानारायण (1987) ने इसी आधार पर प्रयोजनमूलक हिंदी के 6 मुख्य रूप बताए हैं - कार्यालयीन हिंदी, तकनीकी हिंदी वाणिज्य हिंदी, जनसंचार हिंदी।

प्रयोजनमूलक हिंदी भाषा की प्रमुख विशेषताएँ

प्रयोजनमूलक हिंदी की संरचना, सचेतना एवं संकल्पना के विश्लेषण से उसमें अंतर्निहित कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ उद्घाटित होकर सामने आती है, जिनमें प्रमुख इस प्रकार है ।

1. अनुप्रयुक्तता - प्रयोजनमूलक हिंदी की सबसे बडी विशेषता है, उसकी अनुप्रयुक्तता अर्थात् प्रयोजनीयता । जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में हिंदी का विशिष्ट रूप प्रयोजन के अनुसार प्रयोजन होता है। विश्व भर में बहुत सारी भाषाएँ ऐसी है जिनका अस्तित्व व्यवहार तथा साहित्य के क्षेत्र से ही बना हुआ है। उपसर्गों, प्रत्ययों और सामाजिक शब्दों की बहुलता के कारण हिंदी की प्रयोजनमूलक शब्दावली स्वतः अर्थ स्पष्ट करने में समर्थ है । इसलिए हिंदी की शब्दावली का अनुप्रयोग सहज है । हिंदी के प्रयोजनमूलक रूप का सर्वाधिक विकास इसलिए संभव हो सका है । उसमें अनुप्रयुक्तता की महत्तम विशेषता विद्यामान रही है । अनुप्रयुक्तता की दृष्टि से हिंदी के प्रयोगमूलक रूपों में राजभाषा, कार्यालयी, वाणिज्यिक, व्यावसायिक, वैज्ञानिक तथा प्रोद्योगिकी क्षेत्रों में प्रयुक्त हिंदी का समावेश होता है ।

2. वैज्ञानिकता - प्रयोजनमूलक शब्द पारिभाषिक होते हैं । किसी वस्तु के कार्य-कारण संबंध के आधार पर उनका नामकरण होता है, जो शब्द से ही प्रतिध्वनित होता है । ये शब्द वैज्ञानिक तत्वों की भांति सार्वभौमिक होते हैं । प्रयोजनमूलक हिंदी संबंधित विषयवस्तु को विशिष्ट तर्क एवं कार्य कारण संबंधों पर आश्रित नियमों के अनुसार विश्लेषित कर रूपायित

M.G.V.C. Arts, Commerce & Science College ★ MUDDEBIHAL -586212 Dt: Vijayapur.

करती है । प्रयोजनमूलक हिंदी की अध्ययन तथा विश्लेषण की प्रक्रिया विज्ञान की विश्लेषण एवं अद्ययन प्रक्रिया से भी अत्यधिक निकटता रखती है जिन्हें विज्ञान के नियमों के अनुसार सार्वकालिक कहा जा सकता है । विज्ञान की भाषा तथा शब्दावली के अनुसार ही प्रयोजनमूलक हिंदी की भाषा तथा शब्दावली में स्पष्टता, तटस्थता, विषय-निष्ठता तथा तर्क-संगतता विद्यमान है। यह स्पष्ट है कि प्रयोजनमूलक हिंदी अपनी अंतर्वृत्ति, प्रवृत्ति, प्रयुक्ति, भाषिक संरचना और विषय विश्लेषण आदि सभी सारों पर वैज्ञानिकता से सुक्ष्म है । हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है । हिंदी के विराट रूप ही प्रयोजनमूलक हिंदी ।

3. सामाजिकता-सरलता और स्पष्टता- हिंदी की प्रयोजनमूलक शब्दावली सरल और एकार्यक है, जो प्रयोजनमूलक भाषा का मुख्य गुण है । प्रयोजनमूलक भाषा में अनेकार्यता दोष है । हिंदी शब्दावली इस दोष से होता है । प्रयोजनमूलक हिंदी के निर्माण एवं परिचालन का संबंध समाज तथा उससे जुडी विभिन्न ज्ञान शाखाओं से है । सामाजिक परिस्थिति, भूमिका तथा स्तर के अनुरूप प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रयुक्ति-स्तर तथा भाषा रूप प्रयोग में आते हैं । प्रयोजनमूलक हिंदी में सामाजिकता के तत्व एवं विशिष्टता अनिवार्यतः विद्यमान होते हैं ।

4. भाषिक विशिष्टता - प्रयोजनमूलक हिंदी ने अनेक भारतीय तथा पश्चिमी भाषाओं के शब्द-भण्डार को आवश्यकतानुसार ग्रहण कर अपनी शब्द संपदा के वृद्धि किया है । प्रयोजनमूलक हिंदी में तकनीकी एवं पारिभषिक शब्दावली का प्रयोग अनिवार्य रूप से विद्यमान रहता है । उसकी भाषिक विशिष्टता को रेखांकित करता है । प्रयोजनमूलक हिंदी की भाषा सटिक, सुस्पष्ट, गंभीर, वाच्यार्थ प्रधान, सरल तथा उक्तियाँ का प्रयोग नहीं किया जाता है । प्रयोजनमूलक हिंदी में जो भाषिक विशिष्टता तथा विशेष रचनाधर्मिता दृष्टिगत होती है । बोलचाल की हिंदी तथा साहित्यिक हिंदी में दिखाई नहीं देती, यही उसकी विशेषता है ।

संदर्भ

1. वाणिज्य हिंदी - प्र.ए.वी नर्ती
2. प्रयोजनमूलक भाषा और कार्यालयीन हिंदी - डॉ.कृष्णकुमार गोस्वामी

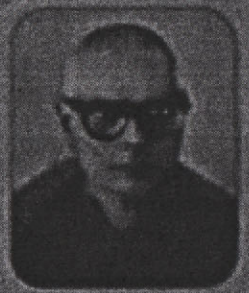

श्री योगेश्वरी शिक्षण संस्था

स्वामी रामानंद तीर्थ महाविद्यालय, अंबाजोगाई

जिला बीड (महाराष्ट्र)

स्वर्ण महोत्सवी वर्ष के उपलक्ष्य में

हिंदी विभाग, स्वामी रामानंद तीर्थ महाविद्यालय, अंबाजोगाई

एवं

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (हैदराबाद केंद्र)

इनके संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

विषय : प्रयोजनमूलक हिंदी : विविध आयाम

शनिवार, तिथि ८ फरवरी २०२०

।। प्रमाणपत्र ।।

प्रमाणित किया जाता है कि, प्रा./डॉ. एस.सी. अंगडि
महाविद्यालय एम.जी.वी.सी कॉलेज, मुद्देबिहाल इन्होंने एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी विषय - 'प्रयोजनमूलक हिंदी: विविध आयाम' सक्रिय सहभागिता की। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में उद्घाटक/प्रमुख अतिथि/सत्राध्यक्ष/विषय प्रवर्तक/सत्र संयोजक/आलेख वाचक/प्रतिभागी के रूप में उपस्थित रहकर सहयोग प्रदान किया तथा इस विषय पर शोधालेख प्रस्तुत किया। तदर्थ यह प्रमाणपत्र दिया जाता है।

डॉ. गणपत राठोड	डॉ. गंगाधर वानोडे	प्रा. रमेश सोनवळकर
संयोजक/विभागप्रमुख	क्षेत्रीय निदेशक	प्राचार्य